ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग
वर्धमान कॉलेज, बिजनौर

नीलाक्षी रानी
शोधार्थिनी
वेक्टेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला (उ.प्र.)

1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य अपने जीवन में जितना ज्यादा सन्तुष्ट होता है, उतना ही उसका समायोजन अच्छा होता है। एक समायोजित व्यक्ति के अन्दर तनाव, कुण्ठा का स्तर कम होता है और वह एक सुखी एवं प्रसन्नचित्त व्यक्ति कहा जा सकता है। षिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक है। षिक्षा ही मनुष्य के जीवन एवं समाज में समायोजन में सहायक है। वर्तमान समय में तो षिक्षा की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। आज जिस प्रकार से महिला सशक्तिकरण पर बल दिया जा रहा है तथा महिला षिक्षा पर सरकारों द्वारा अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है, उससे षिक्षा की भूमिका विशेषकर महिलाओं के सशक्तिकरण के विषय में, और भी अधिक प्रभावी सिद्ध होती जा रही है। यद्यपि आज हमारे संविधान एवं समाज में महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त हैं, परन्तु यदा–कदा आज भी समाज में विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं के साथ भिन्न व्यवहार देखा जा सकता है। विभिन्न कारणों से षिक्षा प्राप्त कर रही बालिकाओं के जीवन में समायोजन की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र भी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन के अध्ययन पर आधारित है।

2 समस्या कथन

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

3 अध्ययन के उद्देष्य

प्रस्तुत शोध के उद्देष्य निम्न प्रकार हैं–
1.ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2.विज्ञान एवं कला वर्ग की बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।

4 अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार हैं–
1.ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
2.विज्ञान एवं कला वर्ग की बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

5 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए आंकड़ों को एकत्रित किया गया है।

6 अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में डा. ए.के.पी. सिन्हा एवं डा. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेन्टरी फॉर स्कूल स्टूडेन्टस का प्रयोग किया गया है।

7 न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बिजनौर के याद्वच्छिक रूप से 10 माध्यमिक विद्यालयों (5 ग्रामीण एवं 5 शहरी क्षेत्र के) से 180 छात्राओं का न्यादर्ष लिया गया है।

वर्ग	ग्रामीण छात्राऐं	भाहरी छात्राऐं	योग
विज्ञान वर्ग	45	45	90
कला वर्ग	45	45	90
योग	90	90	180

8 आंकड़ों का विश्लेशण एवं व्याख्या

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टैस्ट की गणना की गयी तथा आंकड़ों को तालिकाबद्ध करके व्याख्या की गयी है।

9 तालिका

ग्रामीण एवं भाहरी क्षेत्र की बालिकाओं के सांवेगिक, भौक्षिक एवं सामाजिक समायोजन का विवरण

क्षेत्र	सांवेगिक			भौक्षिक			सामाजिक		
	मध्यमान	मानक विचलन	टी टैस्ट	मध्य मान	मानक विचलन	टी टैस्ट	मध्यमान	मानक विचलन	टी टैस्ट
शहरी क्षेत्र की बालिकाएं	1.94	1.83	8.79	7.84	2.10	2.17	4.14	2.45	8.87
ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाएं	7.74	4.33		8.86	2.05		9.02	4.29	
कला वर्ग की बालिकाएं	2.78	2.97	1.50	5.76	1.62	10.68	3.58	2.42	1.22
विज्ञान वर्ग की बालिकाएं	2.12	1.91		7.14	1.28		3.64	2.48	

उपरोक्त तालिका का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में समायोजन के सभी आयामों यथा – सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः शहरी क्षेत्र की बालिकाएं छात्रों के साथ उठने–बैठने, प्रश्न पूछने पर द्वेष, क्रोध का प्रदर्षन नहीं करती एवं पारस्परिक मेल–जोल के कारण समायोजन के तीनों आयामों सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक समायोजित हैं। शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग की बालिकाओं ने शहरी क्षेत्र की कला वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा अच्छा सामाजिक समायोजन दर्शाया है जो छात्रों के साथ सहयोग, मेल–जोल की भावना के कारण रहा।

10 अध्ययन की भौक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध–पत्र के निष्कर्ष बालिकाओं के लिए लाभकारी होंगे। इन निष्कर्षों से वे बेहतर समायोजन से विद्यालय, परिवार एवं समाज में अपना स्थान बना सकेंगी। इस शोध के निष्कर्ष प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को उनके व्यक्तिगत समायोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे, जिससे वे उत्तम समायोजन के द्वारा समाज को एक सही दिशा प्रदान कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 बेस्ट, जे. डब्ल्यू, 1959:रिसर्च इन एजूकेषन – यू.एस.ए. प्रिटिंग हाल (इंक), इंगिल वुड
2 प्रसाद, पी., 1985:प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की आकांक्षा, अर्न्तद्वन्द तथा समायोजन का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, भागलपुर विश्वविद्यालय
3 गैरिट, एच.ई., 1995:षिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिकेषन।
4 अवस्थी, कालू, 2006:बी.टी.सी. षिक्षकों की षिक्षण–विधि, पेषे के प्रति सन्तुष्टि तथा समायोजन का समालोचनात्मक अध्ययन, पी.एच.डी., एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।